REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 5 | FEBRUARY – 2017

नारी समस्त की सौंदर्य एवं चेतना की सर्वोत्तम अभिव्यकित

डॉ. अरजण वी. नंदाणीया
एम.ए., पीएच.डी.

नारी समस्त मानवीय सौंदर्य एवं चेतना की सर्वोत्तम अभिव्यकित है, साथ ही सृष्टि का मूल भी। संस्कृत साहित्य में भी नारी की गौरवगाथा का वर्णन किया गया है।

यत्र नार्यस्तू पूजयन्ते रमन्तें तत्र देवता।
यत्र नार्यस्तू न पूजयन्ते सर्वत्र क्रिया विफला।।

हमारे धर्मशास्त्रों में नारी को देवी माना गया है, जहाँ पर नारी का आदर सत्कार किया जाता है वहाँ पर देवताओं का निवास रहता है, और जहाँ नारीयों का आदर–सत्कार न किया जाए वहाँ पर सारे काम विफल हो जाते है।

हिन्दू समाज आदर्श रुप में पत्नी को अर्धांगिनी, गृहस्वामिनी एवं सम्माननीय मानता है, किन्तु व्यावहारिक रुप में, परिवार में उनकी स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। नारी मानवी न रहकर केवल उपभोग्य–सामग्री मात्र थी, उसका कोई अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं था। नारी केवल पुरुष के हाथों की कठपुतली मात्र थी। पुत्री का जन्म दुःख तथा अभाग्य का प्रतीक समझा जाता था। समाज की महत्वपूर्ण इकाई है – परिवार। वह व्यकित के व्यकितत्व और सामाजिक संबंधो का मूलाधार है, क्योंकि व्यकित जन्म से लेकर मृत्यु–पर्यन्त विभिन्न रुपों में समाज से जुड़ा रहता है। इस प्रकार सामाजिक ढाँचे का प्रमुख आधार परिवार ही है और परिवारों में गहरी जड़े जमाये रुढियाँ एवं प्रथाओं का नारी सबंधों में चित्रण किया है।

माँ और सन्तान :

कहा जाता है कि भगवान हर जगह नही पहुँच पाता इसके लिए उसने माँ का सर्जन किया। जीवन में माँ का सबंध मधुर और अटूट होता है। वह बच्चों का लालन–पालन, खान–पान, शिक्षा, दीक्षा, वर्तमान और भविष्य के निर्माण की चिंन्ता करती है। बच्चों के विवाह की चिंन्ता सबसे अधिक माँ को रहती है। माँ का अपनी सन्तान से न केवल रक्त–संबंध होता है, वरन् वह उसे अतिशय, स्नेह भी देती है। वह स्वयं दुःख सहकर सन्तान को सुख पहुँचाने की सतत चेष्टा करती है।

हमारा समाज माँ की ममता से अपरिचित नहीं कि सन्तान, के लिए हिन्दु नारी क्या नहीं कर सकती। तेजरानी पाठक का 'बदला' कहानी में महाराणा प्रताप का वंशज वीर प्रताप माँ के अपमान के बदले के सम्मुख प्रेम का त्याग कर कर्तव्य को चुनता है 'माँ' क्या कहती हो ? यदि मेरे रहते तुम्हे अपने अपमान का बदला

अपने आप लेना पड़े, तो मेरे जीवन को धिक्कार है। मेरे होते हुए तुम्हें अपने अपमान का बदला लेने के लिए किसी और को ढुँढना नहीं पड़ेगा। तुम्हारे अपमान के आगे प्रेम क्या, मेरे प्राण भी कुछ नहीं है। क्षत्रियों के लिए मान से बढ़कर संसार में कुछ नहीं होता। इसमें वर्णित माँ – बेटे के अन्याय के विरुद्ध लड़ने का निश्चय और दृढ़ संकल्प है।

माँ मुझे अपने आँचल में छुपा ले,
गलेसे लगा ले के और मेरा कोई नहीं.....

भाई – बहन :

एक ही माँ की सन्तान होने के कारण भाई–बहन के मन में सहज स्नेह का भाव रहता है। भारतीय परिवार में बहन और, भाई का प्रेम सात्विक प्रेम है जो वासना से कोसो दूर है। पिता के अभाव में भाई अपनी बहन का भरण–पोषण ही नहीं करता, बल्कि इसके लिए योग्य पति की खोज करके सुखी दाम्पत्य जीवन की मंगलकामना भी करता है।

भाई – बहन का प्रेम सबसे पवित्र माना गया है। बहन भाई को चाहे कितना ही सताये, किन्तु अपने भाई के अनिष्ट की आशंका मात्र ही उसके मन को विचलित बना देती है। पवित्र प्रेम–सूत्र में बँधे भाई–बहन का चित्र – 'भाई–बहन' (सत्यवती मल्लिक की कहानी) में मिलता है। निर्मला का छोटा भाई कमल जुलूस देखने चला जाता है। निरंतर लड़ाई झगड़े के बावजूद भी कमल के खो जाने पर निर्मला अत्यंन्त व्याकुल हो उठती है। उसकी आँखो से निरन्तर आँसू बहते रहते है। अचानक भाई के मिल जाने पर वह भाव विहवल हो उसे सीने से लगा लेती है, कमल को दृढ पाश में बाँधे निर्मला दुगुने वेग से रो रही है। उसके कोमल गुलाबी गाल मोटे–मोटे आँसुओं से भीगे जा रहे है, और वह बार–बार कमल का मुख चूम रही है – ''पगले ! तू कहाँ चला गया था ? गधे! क्यो चला गया था''।(1)

इस प्रकार 'भाई बहन' के प्रेमसूत्र को लेखिका ने रेखांकित किया है।

पति–पत्नी :

नारी और पुरुष दोनो एक दूसरे के पूरक है। नारी के बिना पुरुष का कोई अस्तित्व नही और पुरुष के अभाव में नारी का कोई मूल्य नहीं। इसलिए नारी को पुरुष की अर्धांगिनी माना गया है। दोनो का सबंध अनादि, अखण्ड और अभिन्न है। स्त्री और पुरुष मिलकर जीवन की एक महत्वपूर्ण इकाई बनते है। 'दाम्पत्य' शब्द इसकी पुष्टि करता है। (2)

पति को परमेश्वर माननेवाली नारी अपनी संपूर्ण सेवा, त्याग, सहानुभूति पति पर ही केन्द्रित रखती है। अतः पति–पत्नी संबंध ही पारिवारिक जीवन का मूलाधार है। प्रतापनारायण श्रीवास्तव द्वारा लिखित 'विदा' में चपला कहती है – ''स्त्री पुरुष दोनो एक होकर रहे, दोनो में मतभेद न होने पावें। स्त्री को यह गर्व न हों की मैं स्वामी से बड़ी हूँ, और, स्वामी को अभिमान न हो कि सब बुद्धि ईश्वर ने मेरे ही हिस्से में रखी है। स्त्री घर की, मालकिन है तो पुरुष बाहर का। दोनो उस पवित्र–प्रेम सूत्र में बंधे हो, जहाँ न राग है, न अभिमान, न द्वेष है और न कलह। असीम शान्ति है, अनन्त प्रेम है।''(3)

अतः परिवार को बनाने या बिगाड़ने में पति–पत्नी के सबंध विशेष महत्व रखते है। इस प्रकार नारी अपना सारा जीवन बिना किसी स्वार्थ के अपने परिवार की देखभाल करने मे लगा देती है, और एक बेटी, बहन और पत्नी बनकर अपने जीवन के सारे कर्तव्य बखूबी निभाती है।

संदर्भ :

1. सत्यवती मल्लिक दो फूल पृ. 38
2. आशारानी वोहरा नारी शोषण : आईने और आयाम पृ. 221
3. प्रतापनारायण श्रीवास्तव – विदा, पृ. 183

डॉ. अरजण वी. नंदाणीया
एम.ए., पीएच.डी.